

स्वदेशी शोध संस्थान

वार्षिक प्रतिवेदन

प्रतिवेदन अवधि: 1 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026

अनुक्रमणिका (Index)

क्रम संख्या	विषय-वस्तु
1	हमारे बारे में
2	कार्यकारी सारांश
3	अग्रेषण संदेश
4	टीम स्वदेशी
5	2025-2026 की गतिविधियाँ <ul style="list-style-type: none">➤ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन➤ राष्ट्रीय संगोष्ठी➤ कार्यक्रम➤ व्याख्यान श्रृंखला
6	इंटरनेशिप 2025-2026
7	2025-2026 के प्रकाशन <ul style="list-style-type: none">➤ पुस्तकें➤ जर्नल➤ समाचार पत्रिकाएँ
8	2025-2026 के अध्याय गतिविधियाँ
9	समझौता ज्ञापन (MoU)
10	निष्कर्ष

स्वदेशी शोध संस्थान: वर्ष 2025-26 की वार्षिक रिपोर्ट

रिपोर्ट अवधि: 1 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026 तक

विज़न

स्वदेशी विचारों से प्रेरित होकर एक समृद्ध और महान भारत का निर्माण करना, जो अपनी विरासत को संरक्षित रखते हुए सांस्कृतिक गौरव को सुदृढ़ करे तथा पारंपरिक और आधुनिक क्षेत्रों में सतत विकास को आगे बढ़ाने वाला एक वैश्विक थिंक टैंक बने।

मिशन

अनुसंधान, ज्ञान-साझाकरण और नीतिगत अनुशंसाओं के माध्यम से स्वदेशी विचारों का पुनरुद्धार और प्रसार करना, प्रभावी नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना, तथा कृषि, स्थानीय विनिर्माण, स्वदेशी ज्ञान, उद्यमिता, आईटीईएस (ITES) और नवाचार को सशक्त बनाना।

वर्टिकल

1. युवा गतिमान जनसंख्या
2. पूर्ण रोजगारयुक्त भारत
3. विश्व की सर्वोच्च अर्थव्यवस्था
4. अभेद्य सुरक्षा तंत्र
5. विज्ञान एवं तकनीक में अग्रणी भारत
6. पर्यावरण हितैषी भारत
7. हमारा वैश्विक दृष्टिकोण: वसुदेव कुटुंबकम
8. ऊच्च जीवन मूल्यों से युक्त भारत

अन्य प्रमुख क्षेत्र:

1. कृषि
2. चीन डेस्क
3. पंजाब चेयर

कार्यकारी सारांश: स्वदेशी शोध संस्थान 2025-26 की रिपोर्ट

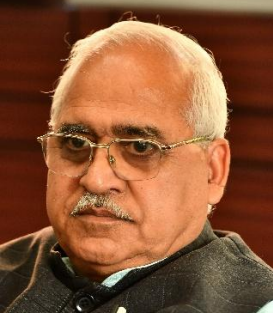
यह रिपोर्ट 1 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026 की अवधि के दौरान स्वदेशी शोध संस्थान की गतिविधियों, शोध कार्यों और रणनीतिक पहलों का विवरण प्रस्तुत करती है। एक उभरते हुए वैश्विक थिंक टैंक के रूप में, संस्थान पारंपरिक स्वदेशी विचारों को आधुनिक सतत विकास के साथ समन्वित करते हुए एक समृद्ध और महान भारत के निर्माण के लिए समर्पित है।

मुख्य मिशन और फोकस: संस्थान का मिशन शोध, नीति-निर्माण में योगदान (पॉलिसी एडवोकेसी) और कृषि, स्थानीय विनिर्माण तथा स्वदेशी ज्ञान जैसे प्रमुख क्षेत्रों के सशक्तिकरण के माध्यम से स्वदेशी दर्शन को पुनर्जीवित करना है।

बौद्धिक नेतृत्व और प्रसार:

- **व्याख्यानमाला:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डिजिटल कौशल, रोजगार सृजन में उद्यमिता की भूमिका, भारतीय दर्शन में रणनीतिक स्वायत्तता, तथा युद्ध की बदलती रणनीतियों जैसे विविध विषयों पर सत्र आयोजित किए गए।
- **शोध एवं प्रकाशन:** द्विमासिक विशेष लेखों और शोध पत्रों के माध्यम से एक सुदृढ़ प्रकाशन कार्यक्रम बनाए रखा गया।
- **क्षमता निर्माण:** इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वूमन और शहीद भगत सिंह कॉलेज जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के छात्रों को तीन माह की इंटरनशिप प्रदान की गई, जिससे राष्ट्र-केंद्रित शोध को प्रोत्साहन मिला है।

संदेश



श्री सतीश कुमार जी

सहसंगठक, स्वदेशी जागरण मंच

जैसे ही हम वित्तीय वर्ष 2025-2026 का समापन करते हैं, हम स्वयं को एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पाते हैं। यह वार्षिक प्रतिवेदन केवल कार्यों का सारांश या वित्तीय स्थिति का लेखा-जोखा नहीं है; बल्कि यह एक गतिशील संगठन की धड़कनों को प्रतिबिंबित करने वाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है। स्वदेशी शोध संस्थान के लिए, यह वर्ष एक निर्णायक अध्याय रहा है, जहाँ हमारा शोध केवल अवलोकन तक सीमित न रहकर सक्रिय प्रभाव की दिशा में अग्रसर हुआ है। पिछले एक वर्ष में, हमारे थिंक टैंक ने प्रारंभिक विकास के चरण से आगे बढ़कर गहन संस्थागत परिपक्वता के चरण में प्रवेश किया है। तीव्र तकनीकी परिवर्तनों और जटिल वैश्विक चुनौतियों से परिभाषित इस युग में, हमारा मिशन एक स्थिर मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता रहा है, जिसने हमें ऐसे परिदृश्य में दिशा दी है जहाँ ईमानदारी और वास्तविक समय में अपने विश्लेषणात्मक ढाँचों को पुनर्निर्मित करने की क्षमता दोनों की आवश्यकता है।

इस अवधि के दौरान प्राप्त उपलब्धियों पर विचार करते हुए यह स्पष्ट होता है कि हमारी सफलताएँ एक सुविचारित दृष्टिकोण पर आधारित रही हैं। हमने अपने शुरुआती दिनों की तीव्र और कभी-कभी अव्यवस्थित ऊर्जा से आगे बढ़कर अधिक परिष्कृत और रणनीतिक गति प्राप्त की है। इस अवधि के दौरान प्राप्त उपलब्धियों पर पुनर्विचार करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि हमारी सफलताओं की नींव एक सुदृढ़ उद्देश्यपूर्णता पर टिकी हुई है। SSS की बौद्धिक उपस्थिति वैश्विक सार्वजनिक विमर्श में उल्लेखनीय रूप से विस्तृत हुई है, जहाँ हमारे शोधकर्ताओं के विचार अब नियमित रूप से प्रमुख मीडिया मंचों जैसे (*The Pioneer*) तथा अन्य प्रमुख राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित और उद्धृत हो रहे हैं। यह सार्वजनिक पहुँच एक सुदृढ़ शैक्षणिक कैलेंडर द्वारा समर्थित है, जिसमें पंद्रह विशिष्ट व्याख्यान, पाँच व्यापक संगोष्ठियाँ, तथा एक ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन शामिल है, जिसने उच्च स्तरीय विचार-विनिमय को संभव बनाया।

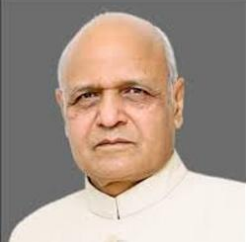
विशेष रूप से, भारत ग्लोबल इंडस्ट्रियल फोरम (BGIF) के माध्यम से, स्वदेशी शोध संस्थान ने सिद्धांत और व्यवहार के बीच की दूरी को पाटते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित

की है। BGIF एक प्रमुख मंच के रूप में उभरा है, जहाँ उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तित्व और अंतरराष्ट्रीय नीति-निर्माता अब हमारी शोध-आधारित अंतर्दृष्टियों से मार्गदर्शन प्राप्त कर वैश्विक रणनीति और राष्ट्रीय नीतियों को आकार दे रहे हैं। हमारी संस्थागत दृढ़ता हमारे विस्तारित सहयोगात्मक तंत्र में भी परिलक्षित होती है; हमने 65 प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापनों (MoUs) पर हस्ताक्षर कर अपने शैक्षणिक नेटवर्क को सुदृढ़ किया है, जिनमें से 30 अत्यंत सक्रिय हैं और व्यापक स्तर पर जमीनी शोध एवं नीति नवाचार को आगे बढ़ा रहे हैं।

वर्ष 2026-2027 की ओर देखते हुए, हमारा दृष्टिकोण महत्वाकांक्षी होने के साथ-साथ यथार्थवादी भी है। हम अगले अध्याय में “उद्देश्यपूर्ण नवाचार” (Disruption with Purpose) की प्रतिबद्धता के साथ प्रवेश कर रहे हैं। आगामी वर्ष के लिए हमारी रणनीति शोध क्षमताओं को गहरा करने, सहयोगात्मक तंत्र का विस्तार करने, तथा यह सुनिश्चित करने पर केंद्रित है कि हमारी बौद्धिक उत्पादकता एक सतत और दूरदर्शी समाज के निर्माण में योगदान दे। हम केवल वर्तमान के लिए निर्माण नहीं कर रहे हैं; हम ज्ञान की ऐसी विरासत का सृजन कर रहे हैं जो आने वाले वर्षों में भी प्रासंगिक बनी रहे। आपकी विश्वास और सहयोग इस यात्रा के सबसे महत्वपूर्ण आधार हैं, और इसके लिए हम हृदय से आभारी हैं। मिलकर, हम अपनी साझा आकांक्षाओं को एक ठोस वास्तविकता में परिवर्तित करना जारी रखेंगे।



श्री सतीश कुमार जी
सहसंगठक, स्वदेशी जागरण मंच



प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा
स्वदेशी शोध संस्थान के उपाध्यक्ष,
यूनेस्को, एमजीआईईपी के अध्यक्ष।

विगत वर्ष 2025-26 हमारे संस्थान के शोध और उभरते सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर विचार-विमर्श के क्षितिज पर एक नए युग का प्रतीक है। आज के इस तेजी से विखंडित हो रहे वैश्विक परिदृश्य में, स्वदेशी शोध संस्थान जैसे एक थिंक-टैंक की भूमिका अब केवल डेटा विश्लेषण तक सीमित नहीं रही है, बल्कि यह उभरते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य की बेहतर समझ विकसित करने तथा समाज और राजनीति के समक्ष उपस्थित समस्याओं के समाधान हेतु कारण-परिणाम संबंधों की स्पष्टता प्रदान करने तक विस्तृत हो गई है। यह वार्षिक प्रतिवेदन हमारे उस सफर का दस्तावेज है, जिसमें हमने अतीत के केवल शैक्षणिक दायरों से आगे बढ़कर "अनुप्रयुक्त बुद्धिमत्ता" (Applied Intelligence) के क्षेत्र में प्रवेश किया है। पिछले एक वर्ष में स्वदेशी शोध संस्थान ने एक गहन परिवर्तन का अनुभव किया है, जहाँ यह केवल विचारों का भंडार न रहकर रणनीतिक दूरदर्शिता का एक सशक्त केंद्र बन गया है। हमने 2025 की जटिलताओं का सामना साक्ष्य-आधारित नेतृत्व की प्रतिबद्धता के साथ किया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारा शोध केवल प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब न होकर प्रणालीगत परिवर्तन का उत्प्रेरक बने।

इस वर्ष हमारी उपलब्धियाँ "प्रणालीगत सोच" की दिशा में हमारे परिवर्तन को दर्शाती हैं। हम एक बढ़ते संगठन की पारंपरिक ऊर्जा से आगे बढ़कर रणनीतिक और डेटा-आधारित गति के चरण में प्रवेश कर चुके हैं। इस वर्ष हमारा मुख्य ध्यान हमारे बौद्धिक संसाधनों को सुदृढ़ करने पर रहा, साथ ही अपनी कार्यप्रणालियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप परिष्कृत करते हुए अपने घरेलू संदर्भ की गहरी समझ बनाए रखी। हमारी उपलब्धियाँ केवल शैक्षणिक नहीं हैं, बल्कि वे उच्च स्तरीय शोध और व्यावहारिक नीतिगत अनुप्रयोग के सफल समन्वय का प्रमाण हैं। हमने यह सिद्ध किया है कि संस्थागत दृढ़ता उन्हीं के द्वारा निर्मित होती है, जो सतही विस्तार के बजाय गहराई को प्राथमिकता देते हैं और विभिन्न सूचनाओं को एक समेकित भविष्य दृष्टि में रूपांतरित करने की क्षमता रखते हैं।

जैसे ही हम आगामी सत्र 2026-2027 की ओर अग्रसर होते हैं, हमारा मार्गदर्शन अधिक स्पष्ट और बहुआयामी हो चुका है। हम एक ऐसे चरण में प्रवेश कर रहे हैं, जहाँ स्वदेशी शोध संस्थान महत्वपूर्ण नीतिगत क्षेत्रों में विमर्श का नेतृत्व करेगा। "उद्देश्यपूर्ण परिवर्तन" (Disruption with

Purpose) के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का अर्थ है कि हम अधिक प्रभावी और सतत समाधान खोजने के लिए स्थापित मानकों को चुनौती देते रहेंगे। हम एक ऐसी बौद्धिक विरासत का निर्माण कर रहे हैं, जो अल्पकालिक उपलब्धियों के बजाय दीर्घकालिक सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता देती है।

हम अपने शैक्षणिक साथियों, नीति-निर्माताओं और सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं—आपका निरंतर सहयोग ही इस संगठन की धड़कन है। हम आपके अटूट समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं, क्योंकि हम सूचित विचार प्रक्रियाओं और समाधान की शक्ति के माध्यम से भविष्य को आकार देने की दिशा में निरंतर अग्रसर हैं।



प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा जी

उपाध्यक्ष, स्वदेशी शोध संस्थान, अध्यक्ष, यूनेस्को, एमजीआईईपी।



प्रो. सोमनाथ सचदेवा जी
कार्यकारी अध्यक्ष, स्वदेशी शोध संस्थान,
कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

मुझे वर्ष 2025-26 के लिए स्वदेशी शोध संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए अत्यंत संतोष का अनुभव हो रहा है। यह वर्ष हमारी गतिविधियों के विस्तार और विविधता, दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, जो स्वदेशी चिंतन, नीति अनुसंधान तथा राष्ट्र-केंद्रित विकास को आगे बढ़ाने की हमारी सतत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस वर्ष की एक प्रमुख उपलब्धि **‘विजन 2047: समृद्ध एवं महान भारत’** विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन रहा। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में नीति-निर्माताओं और विचारकों का एक अद्वितीय समागम हुआ, जिसमें केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य, प्रमुख उद्योगपति, विशिष्ट शिक्षाविद, आईआईटी एवं एनआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के कुलपति एवं निदेशक, रक्षा विशेषज्ञ, सांसद एवं राज्य विधानसभाओं के सदस्य शामिल हुए। यह सम्मेलन भारत की विकास यात्रा को 2047 तक दिशा देने हेतु सार्थक संवाद का एक सशक्त मंच सिद्ध हुआ।

इसके अतिरिक्त, संस्थान ने प्रमुख विषयों पर तीन राष्ट्रीय स्तर के संगोष्ठियों का आयोजन किया, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर बौद्धिक विमर्श को और मजबूती मिली। ज्ञान के प्रसार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता विशेषज्ञ व्याख्यानो की श्रृंखला के माध्यम से भी निरंतर जारी रही, जिसने समकालीन आर्थिक और नीतिगत मुद्दों पर गहन चर्चा को प्रोत्साहित किया।

इस वर्ष स्वदेशी शोध संस्थान के पाँच मंजिला भवन **‘ज्ञान कुंज’** का शुभ उद्घाटन भी हुआ, जो अनुसंधान, संवाद और सहयोग के लिए एक समर्पित स्थान के रूप में महत्वपूर्ण कदम है। संस्थान को अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी करने का भी अवसर प्राप्त हुआ, जिससे वैश्विक संवाद और विचारों के आदान-प्रदान को बल मिला।

हमारे प्रकाशनों की पहुंच और प्रभाव दोनों में वृद्धि हुई है। त्रैमासिक पत्रिका **‘अर्थायाम’** तथा पाक्षिक समाचार पत्र **‘अर्थशास्त्रम’** ने बौद्धिक अभिव्यक्ति के निरंतर मंच प्रदान किए हैं। इसके

अतिरिक्त, इस वर्ष पाँच पुस्तकों का प्रकाशन हुआ, जो स्वदेशी दृष्टिकोण से ज्ञान-संपदा को समृद्ध करने में सहायक हैं।

इस वर्ष की एक उल्लेखनीय पहल 'भारत ग्लोबल इंडस्ट्रीज फोरम' की स्थापना रही, जिसने उद्योग जगत के साथ सार्थक संवाद को प्रोत्साहित किया और अकादमिक, नीति तथा उद्योग के बीच सेतु का कार्य किया। इस मंच के अंतर्गत विभिन्न सहयोगात्मक गतिविधियों का आयोजन कर उद्योग से जुड़ाव को और सुदृढ़ किया गया।

संस्थान ने युवाओं के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए 2-3 माह की अवधि के संरचित इंटरनेशिप कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिससे उन्हें अनुसंधान एवं नीति-निर्माण का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

भौगोलिक विस्तार भी इस वर्ष की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। पंजाब, चेन्नई, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश सहित अन्य राज्यों में संस्थान के नए अध्याय स्थापित किए गए, जिससे व्यापक पहुंच और विकेन्द्रीकृत सहभागिता सुनिश्चित हुई।

इसके अतिरिक्त, संस्थान ने 100 से अधिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए, जिनमें एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज (AIU), आईआईटी, एम्स, एनआईटी तथा कई प्रतिष्ठित केंद्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय शामिल हैं। ये साझेदारियाँ सहयोगात्मक अनुसंधान और शैक्षणिक आदान-प्रदान को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।

आगे की दिशा में, संस्थान स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व के विषयों पर गहन एवं संरचित अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। संस्थान के विभिन्न आयामों पर बौद्धिकों के ऑनलाइन समूह बनाने की योजना है, जिससे विचारों का आदान-प्रदान सुदृढ़ हो सके। हम ऐसे केंद्रित अनुसंधान कार्यक्रम विकसित करने का प्रस्ताव रखते हैं, जो आत्मनिर्भर और वैश्विक प्रतिस्पर्धी भारत की परिकल्पना के अनुरूप व्यावहारिक नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करें। साथ ही, प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग संगठनों और वैश्विक थिंक टैंकों के सहयोग से अधिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों और विषयगत संवादों का आयोजन करने का लक्ष्य है, जिससे वैश्विक स्तर पर हमारी बौद्धिक एवं संस्थागत साझेदारियाँ विस्तृत हों।

ये सभी उपलब्धियाँ हमारे स्वदेशी परिवार, माननीय सलाहकार मंडल, टीम सदस्यों, साझेदारों, शोधकर्ताओं एवं शुभचिंतकों के निरंतर सहयोग के बिना संभव नहीं थीं। मैं संस्थान की प्रगति और सफलता में योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

आगे बढ़ते हुए, हम अपने अनुसंधान को और सुदृढ़ करने, अपनी पहुंच का विस्तार करने तथा एक समृद्ध और महान भारत के निर्माण में सार्थक योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

Relaxation

प्रो. सोमनाथ सचदेवा जी
कार्यकारी अध्यक्ष, स्वदेशी शोध संस्थान,
कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र



प्रोफेसर प्रदीप एस. चौहान

महासचिव, स्वदेशी शोध संस्थान

सेंटर फॉर इकोनॉमिक स्टडीज़ एंड प्लानिंग (CESP), सामाजिक विज्ञान संकाय (SSS),
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU), नई दिल्ली

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मैं स्वदेशी शोध संस्थान की वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह संस्थान निरंतर एक सशक्त शैक्षणिक उत्कृष्टता, बौद्धिक गहराई तथा नीति-उन्मुख शोध के केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है, जो भारत की सभ्यतागत लोकाचार पर आधारित है। पिछले वर्ष के दौरान संस्थान ने एक सुदृढ़ ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण हेतु अपनी प्रतिबद्धता को और सशक्त किया है, जो अनुभवजन्य शोध, स्वदेशी पद्धतियों और रणनीतिक दूरदर्शिता को समाहित करते हुए समकालीन सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है।

ऐसे समय में जब वैश्विक विमर्श प्रायः उन ढाँचों से प्रभावित होता है जो भारत की वास्तविकताओं को पूर्णतः प्रतिबिंबित नहीं करते, संस्थान ने अपने स्वयं के बौद्धिक आधार निर्मित करने की दिशा में एक निर्णायक कदम उठाया है। हमारा कार्य प्रमाण-आधारित एवं जमीनी शोध पर केंद्रित है, जहाँ डेटा केवल संकलित नहीं किया जाता, बल्कि उसे भारत-केंद्रित दृष्टिकोण से सार्थक रूप में व्याख्यायित किया जाता है। स्वदेशी पद्धतियों, मापन ढाँचों, सूचकांकों और संकेतकों के विकास के माध्यम से हम 'विकास के भारतीय प्रतिमान' को अभिव्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

संस्थान की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह शोध और नीति के बीच की दूरी को कम करता है। हमारा दृष्टिकोण जमीनी स्तर से प्राप्त फीडबैक पर आधारित है, जिससे हमारी नीतिगत सिफारिशें न केवल विश्लेषणात्मक रूप से सुदृढ़ होती हैं, बल्कि व्यावहारिक रूप से प्रासंगिक और सामाजिक रूप से समावेशी भी होती हैं। विभिन्न हितधारकों के साथ सतत संवाद, क्षेत्रीय अध्ययन और अंतःविषय सहयोग के माध्यम से हम भारत में साक्ष्य-आधारित नीतिनिर्माण में सार्थक योगदान देने का प्रयास कर रहे हैं।

संस्थान विद्वानों, शोधकर्ताओं और व्यावसायिक विशेषज्ञों के लिए एक प्रमुख मंच के रूप में भी उभर रहा है। आलोचनात्मक चिंतन और नवाचारी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने वाले वातावरण के माध्यम से हम राष्ट्रीय विकास के प्रति समर्पित नई पीढ़ी के शोधकर्ताओं को तैयार कर रहे हैं। वर्ष भर आयोजित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और विशेषज्ञ संवादों से हमारे बौद्धिक आदान-प्रदान तथा वैश्विक सहभागिता के प्रति समर्पण का परिचय मिलता है, जबकि हमारी जड़ें भारतीय संदर्भ में दृढ़ता से स्थापित हैं।

मुझे विशेष संतोष है कि हमारे नेतृत्व, मार्गदर्शकों और शोध टीमों का निःस्वार्थ समर्पण इस संस्थान की प्रगति का आधार है। अनुभवी सामाजिक नेताओं और अर्थशास्त्र सहित विभिन्न विषयों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में संस्थान निरंतर 'इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस' बनने की दिशा में अग्रसर है। उनके अथक प्रयासों और साझा दृष्टिकोण ने संस्थान की शैक्षणिक उपस्थिति और नीतिगत प्रभाव को निरंतर विस्तार दिया है।

आगे बढ़ते हुए हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट है- 'विजन 2047' के व्यापक परिप्रेक्ष्य में एक समृद्ध और महान भारत के निर्माण में योगदान देना। इसमें सामाजिक-आर्थिक संकेतकों को सुदृढ़ करना, नवाचार को प्रोत्साहित करना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाना, पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करना तथा राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करना शामिल है और यह सब भारतीय मूल्यों के अनुरूप भी हैं।

आगे की यात्रा चुनौतीपूर्ण होने के साथ-साथ प्रेरणादायक भी है। सत्य, अनुभव और स्वदेशी ज्ञान पर आधारित अपनी कथाओं का निर्माण करते हुए हम विकास के विमर्श को पुनर्परिभाषित करने और भारत को एक वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करने का संकल्प रखते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वदेशी शोध संस्थान इस परिवर्तनकारी यात्रा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

मैं सभी सहयोगियों, भागीदारों और शुभचिंतकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने संस्थान के इस मिशन में निरंतर सहयोग प्रदान किया है। हम सभी मिलकर नव उत्साह और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ते रहें।



प्रोफेसर प्रदीप एस. चौहान
महासचिव, स्वदेशी शोध संस्थान.

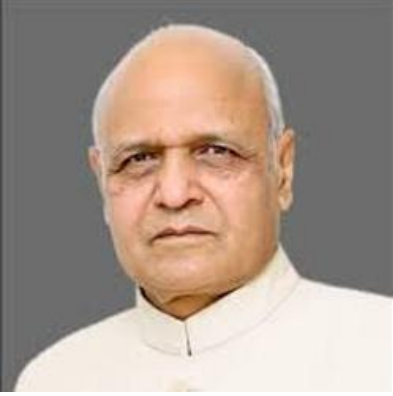
स्वदेशी शोध संस्थान की टीम

माननीय सलाहकार मंडल



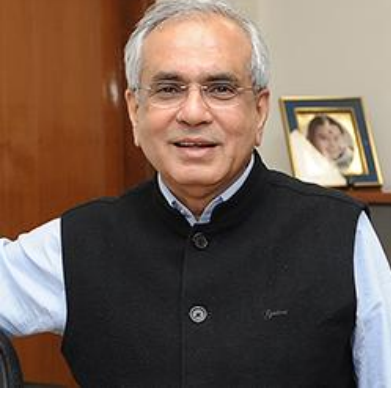
अध्यक्ष पद्मश्री श्रीधर वैबू

संस्थापक, जोहो कोरपोरेशन



उपाध्यक्ष

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा अध्यक्ष, यूनेस्को, MGIEP



उपाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार पूर्व उपाध्यक्ष, नीति आयोग



कार्यकारी अध्यक्ष मानद प्रो. सोम नाथ सचदेवा

कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

माननीय सलाहकार मंडल



प्रो. योगेश सिंह

कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय



डॉ. धनपत राम अग्रवाल, ओएनजीसी विदेश लिमिटेड



प्रो. राम सिंह, निदेशक, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स



श्री संजय कुंडू, पूर्व डीजीपी, हिमाचल प्रदेश

स्वदेशी शोध संस्थान की वर्ष 2025-26 में महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

“विजन 2047: समृद्ध और महान भारत” विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 24 से 26 अप्रैल 2025 तक कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय (अमरकंटक) तथा आईसीएआर द्वारा किया गया।



इस सम्मेलन में 2400 से अधिक प्रतिभागियों, 92 से अधिक वक्ताओं और 700 से अधिक शोध पत्रों के साथ 10 पूर्ण सत्र एवं 19 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। सम्मेलन में आत्मनिर्भरता, आध्यात्मिक एवं तकनीकी नेतृत्व, समावेशी विकास तथा सतत विकास की दिशा में भारत की यात्रा पर विशेष जोर दिया गया। 40 से अधिक एमओयू (MoUs) पर हस्ताक्षर हुए तथा मूल्य-आधारित नवाचार और सहयोग के लिए राष्ट्रव्यापी आह्वान किया गया। इसमें विशिष्ट नेताओं और विशेषज्ञों की सहभागिता रही।

केंद्रीय मंत्री एवं सरकारी अधिकारी: श्री मनोहर लाल, श्री शिवराज सिंह चौहान, श्री नितिन गडकरी, श्रीमती स्मृति ईरानी, श्रीमती रेखा गुप्ता, श्री संजीव सान्याल, श्री राजीव नयन, डॉ. शामिका रवि, डॉ. राजू कुमार

उद्योगपति, उद्यमी एवं विशेषज्ञ: डॉ. ए.एस. मित्तल, श्री प्रसन्ना शर्मा, श्री सुशील कुमार जैन, श्री अनिल कुमार झा, श्री रमेश अग्रवाल, श्री इंद्रा सेन रेड्डी, जनरल वी.के. चतुर्वेदी।

यह उच्चस्तरीय सम्मेलन स्वदेशी शोध संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (KUK), चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (CCSHAU), हिसार तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के संयुक्त प्रयास से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में नॉर्वे के यूनिवर्सिटी ऑफ एगडर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU) तथा ऑर्गनाइज़र मैगज़ीन जैसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों की सहभागिता रही, जिसने भारत को उसकी स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में एक वैश्विक मंच प्रदान किया।

यह पहल “विजन 2047” की भावना को एक जीवंत परियोजना के रूप में स्थापित करती है, जो भारत की ऐतिहासिक विरासत और भविष्य के वैश्विक औद्योगिक नेतृत्व की आवश्यकताओं के बीच सेतु का कार्य करती है।

औद्योगिक एवं आर्थिक नेतृत्व के रणनीतिक स्तंभ

कृषि, स्थिरता और “कचरे से संपदा” (Waste to Wealth)

- **प्रौद्योगिकी एकीकरण:** ड्रोन, सटीक सिंचाई (Precision Irrigation) और AI विश्लेषण का उपयोग करके आत्मनिर्भर कृषि क्षेत्र का निर्माण।
- **आर्थिक अवसर:** “Waste to Wealth” पहल के तहत फसल अवशेषों को जैव ईंधन (Biofuels) और जैव प्लास्टिक (Bioplastics) में परिवर्तित कर लगभग 50 अरब डॉलर के बाजार की संभावनाएँ।
- **पर्यावरण संरक्षण:** 18.75 लाख लोगों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण और जल-स्मार्ट धान बीजों का उपयोग, जो जलवायु परिवर्तन से होने वाली मृदा क्षरण की समस्या से निपटने में सहायक हैं।

नवाचार, डीप-टेक और ज्ञान प्रणाली

- **परंपरा-प्रेरित तकनीक:** वैदिक गणित के माध्यम से आधुनिक क्रिप्टोग्राफी को समझने और मातृका विद्या (भाषाई कौशल) से प्रेरित होकर स्थानीय AI भाषा उपकरण विकसित करने की दिशा में कार्य।
- **तकनीक का लोकतंत्रीकरण:** केवल अंग्रेज़ी-आधारित मॉडलों से आगे बढ़ते हुए भारत की 22 आधिकारिक भाषाओं के लिए क्षेत्रीय AI इंटरफेस विकसित करना।
- **स्टार्टअप इकोसिस्टम:** स्थानीय नवाचारों को वैश्विक स्तर पर लागू करते हुए 1000 नए यूनिकॉर्न स्टार्टअप विकसित करने का सामूहिक लक्ष्य।

जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग

भारत की 65% आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है, जिसे आर्थिक शक्ति में परिवर्तित करने पर विशेष जोर दिया गया।

- **ड्रोन दीदी मॉडल:** मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा इस प्रमुख योजना पर प्रकाश डाला गया, जिसमें ग्रामीण महिलाओं को ड्रोन पायलट के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है। इससे कृषि उत्पादन में 30% तक वृद्धि और विकेन्द्रीकृत रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं।

- **शिक्षा सुधार:** प्रो. राज कुमार गोयल और ए.एस. मित्तल ने उद्योग के सहयोग से पाठ्यक्रम निर्माण और मॉड्यूलर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि डिग्रियाँ सीधे रोजगार में परिवर्तित हो सकें, विशेष रूप से 10 ट्रिलियन डॉलर की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हम राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन करते हैं, जो नीति-निर्माताओं, उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तियों तथा अकादमिक विद्वानों को एक साथ लाकर शासन, वाणिज्य और अत्याधुनिक शोध के बीच एक सशक्त समन्वय स्थापित करती हैं। हमारी संगोष्ठियाँ केवल विचार-विमर्श के मंच नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे रणनीतिक इंजन के रूप में कार्य करती हैं, जिनका उद्देश्य क्रियान्वयन योग्य श्वेत पत्र (White Papers) और नीतिगत ढाँचे तैयार करना है, जो भारत की आत्मनिर्भरता की यात्रा को गति प्रदान करते हैं।

- “भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र: अवसर एवं चुनौतियाँ” विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन IILM, स्वदेशी शोध संस्थान एवं इनोवेशन हब उत्तर प्रदेश द्वारा 26 फरवरी 2026 को किया गया।



इस संगोष्ठी ने भारत में नवाचार, वित्तपोषण, नीतिगत समर्थन और उद्यमशीलता विकास से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक एवं प्रभावशाली संवाद को जन्म दिया। चर्चाओं का केंद्र व्यवसाय की सफलता के प्रमुख स्तंभ रहे, जिनमें वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता, नियामक ढाँचे और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र शामिल थे। प्रतिभागियों ने पारंपरिक विपणन “युक्तियों” से हटकर पारदर्शिता एवं वैज्ञानिक आधार पर निर्मित उत्पादों के मॉडल को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

सत्रों का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह रहा कि भारतीय बाजार में दीर्घकालिक स्थिरता के लिए वित्तीय अनुशासन, डेटा-आधारित निर्णय-प्रक्रिया और उच्च स्तरीय परिचालन मानकों का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। संगोष्ठी का एक महत्वपूर्ण क्षण समापन सत्र में प्रो. अश्विनी महाजन

जी का संबोधन रहा, जिसमें उन्होंने आर्थिक आत्मनिर्भरता और “स्वदेशी” दृष्टिकोण पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए पूरे आयोजन को एक सार्थक दिशा प्रदान की। शोध, विकास और लचीलापन के महत्व को रेखांकित करते हुए संगोष्ठी ने यह स्थापित किया कि स्टार्टअप क्षेत्र में लाभप्रदता ईमानदार उपभोक्ता संवाद और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

- **ज्ञान कुंज में दिव्य आरंभ: 14 जनवरी 2026 को प्राण प्रतिष्ठा: स्वदेशी शोध संस्थान ने ज्ञान कुंज में देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन किया।**



इस अवसर पर महामंडलेश्वर श्री कृष्ण विद्यार्थी जी महाराज, सांसद बांसुरी स्वराज तथा स्वदेशी जागरण मंच के नेता उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में आध्यात्मिक मूल्यों और “पंचभूत” दर्शन को संस्थान के राष्ट्रीय पुनर्जागरण और भारत के विकास मिशन में समाहित करने पर विशेष बल दिया गया।

- **स्वदेशी शोध संस्थान एवं भारत ग्लोबल इंडस्ट्रीज फोरम, 10 फरवरी 2026**



ज्ञान कुंज में आयोजित इस संगोष्ठी में प्रमुख वक्ताओं में श्री कश्मीरी लाल जी, प्रो. अश्विनी महाजन तथा प्रो. प्रदीप सिंह चौहान शामिल रहे। चर्चा का मुख्य केंद्र वैश्विक व्यापार में भारत की रणनीतिक भूमिका था, विशेष रूप से भारत-यूरोप संघ (EU) व्यापार ढांचे और द्विपक्षीय समझौतों की ओर बढ़ते रुझान का विश्लेषण किया गया।

गणमान्य व्यक्तियों ने इस बात पर बल दिया कि “विकसित भारत @2047” के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुणवत्ता मानकों, स्वदेशी नवाचार तथा सुदृढ़ अनुसंधान एवं विकास (R&D) पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है, ताकि उभरते वैश्विक अवसरों का लाभ उठाया जा सके।

संगोष्ठी में यह सहमति बनी कि गुणवत्ता, नवाचार और सुशासन का त्रिकोण (Triad) व्यापार समझौतों के माध्यम से घरेलू क्षमताओं को सशक्त बनाने में निर्णायक भूमिका निभाएगा। इसके लिए अनुशासित क्रियान्वयन, संस्थागत सुधार और रणनीतिक निवेश अत्यंत आवश्यक हैं, जिससे एक वैश्विक प्रतिस्पर्धी औद्योगिक अर्थव्यवस्था का निर्माण कर समृद्ध और विकसित भारत 2047 का लक्ष्य हासिल किया जा सके।

मुख्य परिणाम (Outcomes):

- BGIF और SSS के बीच समझौता (MoU)
- वाणिज्य मंत्रालय हेतु 100 नीति संक्षेप (Policy Briefs)
- 50 औद्योगिक क्लस्टरों का विकास
- MSME कौशल विकास के माध्यम से 7 वर्षों में 2 करोड़ रोजगार सृजन

यह पहल भारत को विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, पूर्ण रोजगार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नेतृत्व और वैश्विक मूल्यों के केंद्र के रूप में स्थापित करने में सहायक होगी। साथ ही, भारत को G20 ट्रोइका में सशक्त भूमिका, EU-FTA के अग्रणी समर्थक तथा ग्लोबल साउथ के विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

रणनीतिक व्यापार नीतियाँ निर्भरता को कम करते हुए स्वदेशी दर्शन को सुदृढ़ करेंगी और एक सतत एवं समावेशी विकास पथ सुनिश्चित करेंगी। यह औद्योगिक क्षेत्र का एक निर्णायक क्षण है, जो भारत को ट्रिलियन-डॉलर विनिर्माण शक्ति, “विश्व गुरु 2047” और एक शाश्वत सभ्यता के अग्रदूत के रूप में स्थापित करने की दिशा में प्रेरित करता है।

क्वांटम, सेमीकंडक्टर्स, ब्लॉकचेन सप्लाइ चैन और फेडरेटेड लर्निंग जैसे उन्नत क्षेत्रों में प्रगति एक व्यापक औद्योगिक पुनर्जागरण का संकेत देती है। साथ ही, यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के बहु-विषयक दृष्टिकोण को साकार करते हुए स्वदेशी शोध संस्थान को एक प्रमुख स्वदेशी औद्योगिक थिंक टैंक के रूप में स्थापित करता है।

- श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी स्मृति राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन “स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और भारत का पुनरुत्थान” विषय पर 09 नवंबर 2025 एवं 10 नवंबर 2025 को किया गया।



इस संगोष्ठी में विद्वानों, चिंतकों और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने भाग लेकर भारत की सभ्यतागत शक्तियों तथा आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने के रोडमैप पर गहन विचार-विमर्श किया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में श. एस. एन. सुब्रह्मण्यम (एमडी एवं सीईओ, एल एंड टी), प्रो. सोमनाथ सचदेवा (कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय), प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा, श्री आर. सुंदरम (एसजेएम), प्रो. आर. के. मित्तल, श्री कश्मीरी लाल, श. सतीश कुमार जी, प्रो. बी. आर. कम्बोज, प्रो. अश्विनी महाजन तथा श्रीमती दिव्या नंदवाना शामिल रहे। इन सभी ने मिलकर दत्तोपंत ठेंगड़ी के दूरदर्शी विचारों को 21वीं सदी के वैश्विक नेतृत्व की व्यावहारिक आवश्यकताओं से जोड़ने का प्रयास किया।

कार्यक्रम के दौरान स्वदेशी शोध संस्थान द्वारा “अर्थायम” जर्नल का भी विमोचन किया गया, जो शोध-आधारित राष्ट्रीय विकास के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सत्र का समापन स्वदेशी दर्शन की प्रासंगिकता और भारत के भविष्य में उसकी भूमिका पर सार्थक चिंतन के साथ हुआ। संगोष्ठी में समावेशी भागीदारी के लिए एक ठोस रोडमैप प्रस्तुत किया गया, जिसमें विशेष रूप से महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संभावनाओं और “HIMERA” जैसे ज्ञान संसाधनों पर जोर दिया गया।

उद्योग विशेषज्ञों ने उत्पादन, सहभागिता और संरक्षण के “तीन स्तंभ” मॉडल का प्रस्ताव रखते हुए MSME क्लस्टरों को विकास का प्रमुख माध्यम बताया। स्वदेशी सफलता का एक व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए श्रीमती दिव्या नंदवाना (वर्टेक्स इंजीनियरिंग) ने बताया कि उनकी कंपनी, जो एटीएम चिप्स की एकमात्र भारतीय निर्माता है, ने आयात पर निर्भरता को कम करते हुए 50 से अधिक देशों में निर्यात भी किया है।

इस संगोष्ठी ने एक सुदृढ़ संस्थागत रोडमैप तथा स्वदेशी इकोसिस्टम के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया।

• भारत ग्लोबल इंडस्ट्रीज़ फोरम (BGIF) कॉन्क्लेव, स्वदेशी शोध संस्थान के सहयोग से 31 अगस्त 2025 को आयोजित किया गया।



विषय: भारत को एक वैश्विक औद्योगिक केंद्र बनाना, मुख्य आकर्षणों में दूरदर्शी भाषण, रक्षा एवं उद्योग से संबंधित पैनल चर्चाएँ, महिला उद्यमिता पर विशेष सत्र, तथा वर्ष 2047 तक के लिए एक ठोस रोडमैप प्रस्तुत किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री राम लाल जी एवं श्री भूपेंद्र यादव उपस्थित रहे। उनके साथ-साथ औद्योगिक नेताओं, नीति-निर्माताओं और अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों की भागीदारी ने इस कॉन्क्लेव को भारत के औद्योगिक भविष्य और वैश्विक आर्थिक संभावनाओं पर एक महत्वपूर्ण मंच बना दिया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिष्ठित प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें श्री सतीश कुमार, श्री आर. सुंदरम, डॉ. अरविंद शर्मा, डॉ. विक्रमजीत सिंह साहनी, श्री राज कुमार गोयल, श्री मधुसूदन अग्रवाल तथा संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया से आए औद्योगिक प्रतिनिधि शामिल थे।

आत्मनिर्भर भारत और वोकल फॉर लोकल के संदर्भ में यह सम्मेलन भारतीय उद्योग और वैश्विक रुचि के बीच एक मजबूत संबंध को दर्शाता है।

यह कॉन्क्लेव एक ऐसे मंच के रूप में उभरा, जहाँ इस पर विचार-विमर्श किया गया कि भारत कैसे अपनी मूल्यों और विकास प्राथमिकताओं को बनाए रखते हुए स्वयं को एक वैश्विक औद्योगिक शक्ति में परिवर्तित कर सकता है।

कार्यक्रम

सहयोगात्मक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देते हुए, हमारे कार्यक्रम केवल संवाद तक सीमित नहीं रहते, बल्कि आत्मनिर्भर और वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी भारत की दिशा में एक एकीकृत आंदोलन को गति प्रदान करते हैं। हम ऐसे उच्च-प्रभाव वाले आयोजनों का संचालन करते हैं, जो नीति-निर्माताओं, उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तित्वों और अकादमिक क्षेत्र के अग्रदूतों को एक मंच पर लाकर दूरदर्शी शोध और उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन के बीच की खाई को पाटते हैं।

- 26/03/2026 को ज्ञान कुंज में एक प्रेरणादायक संध्या के अविस्मरणीय क्षणों का अनुभव हुआ। हमें श्री सुरेश सोनी जी की मेजबानी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जहाँ उन्होंने स्वदेशी दर्शन पर गहन विचार-विमर्श प्रस्तुत किया।



"सोने की चिड़िया" के ऐतिहासिक संदर्भ से लेकर समकालीन समय में समतामूलक विकास की आवश्यकता तक, यह संवाद भारतीय सभ्यता के गूढ़ ज्ञान का एक उत्कृष्ट उदाहरण था।
दिन का प्रेरक वाक्य: सतत उपभोग ही समतामूलक विकास का मार्ग है।

औपनिवेशिक प्रभावों पर चिंतन करते हुए, सोनी जी ने बताया कि किस प्रकार ब्रिटिश शासन ने भारत की सुदृढ़ और उन्नत व्यवस्थाओं को योजनाबद्ध तरीके से ध्वस्त किया, जिससे भारत "सोने की चिड़िया" से एक लूटे हुए आर्थिक ढांचे में परिवर्तित हो गया। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि भारतीय सभ्यता में विज्ञान (विज्ञान), कला (कला) और अध्यात्म (आध्यात्म) को कभी अलग-अलग नहीं देखा गया, बल्कि इन्हें जीवन के प्रत्येक आयाम में समन्वित रूप से अपनाया गया।

उन्होंने अपने वक्तव्य का समापन वैदिक सिद्धांत “त्यागपूर्वक उपभोग करो” का उल्लेख करते हुए किया, यह संकेत देते हुए कि वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब उपभोग में संयम और प्रकृति के प्रति संतुलन बना रहे।

इस सत्र के परिणामस्वरूप संस्थान के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य-योजनाएँ निर्धारित की गईं। शोधकर्ताओं को केवल रोजगार सृजन के बजाय “आत्मनिर्भरता” के मॉडल को प्राथमिकता देने तथा भारतीय सभ्यता की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने वाले ऐतिहासिक “उपयोग” के प्रतिरूपों का दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रेरित किया गया।

इन सांस्कृतिक मूल्यों (संस्कारों) को आधुनिक शोध ढाँचों में समाहित करके, स्वदेशी शोध संस्थान भारत की अस्मिता के क्षरण को रोकने और एक सुदृढ़, ज्ञान-आधारित भविष्य के निर्माण की दिशा में अग्रसर है।

- **रंगों के इस पावन पर्व Holi को हमने अपने होली मिलन समारोह में बड़े हर्ष और उत्साह के साथ मनाया। यह आयोजन एकता, सांस्कृतिक समरसता और हमारी परंपरा में निहित आपसी भाईचारे की भावना का सुंदर प्रतिबिंब था।**



- “150वीं वर्षगांठ वंदे मातरम महोत्सव”- स्वदेशी को समर्पित एक विशेष संध्या। ‘विविधता में एकता’ की भावना को लोक नृत्यों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से भव्य रूप से प्रस्तुत किया गया।



इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण “विविधता में एकता” का अद्भुत प्रदर्शन था, जहाँ भारत के विभिन्न राज्यों के लोक कलाकार एक ही मंच पर एकत्र हुए। उत्तर भारत के ऊर्जावान लोक नृत्यों से लेकर दक्षिण भारत की भावपूर्ण एवं कथात्मक प्रस्तुतियों तक, प्रत्येक प्रस्तुति ने भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को जीवंत किया। ये नृत्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि भारत की स्वदेशी पहचान के सशक्त प्रतीक हैं, जो प्राचीन विरासत और आधुनिक राष्ट्रीय गौरव के बीच सेतु का कार्य करते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों को एक मंच पर लाकर यह आयोजन राष्ट्रीय एकता की गहरी भावना को सुदृढ़ करता है। जैसे-जैसे संस्थान और मंच बौद्धिक एवं आर्थिक स्वराज की दिशा में अग्रसर हैं, “एक शाम स्वदेशी के नाम” इस आंदोलन की धड़कन के रूप में कार्य करता है, जो हर नागरिक को यह स्मरण कराता है कि आत्मनिर्भर भारत की यात्रा सांस्कृतिक पुनर्जागरण के साथ-साथ औद्योगिक विकास से भी जुड़ी है।

- 1 फरवरी 2026 को “संभावनाओं से प्रदर्शन तक: बजट 2026-27 संवाद” का आयोजन ज्ञान कुंज में किया गया।



इस चर्चा में बजट के छह प्रमुख स्तंभों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया: आर्थिक विकास को बनाए रखना, विकास की नींव को सुदृढ़ करना, जन-केंद्रित विकास, विश्वास-आधारित शासन, व्यापार करने में आसानी, जीवनयापन की सुगमता तथा वित्तीय प्रबंधन। विशिष्ट वक्ताओं- श्री कश्मीरी लाल (अखिल भारतीय संगठक), श्री सतीश कुमार, अखिल भारतीय सह-संगठक डॉ. सरबजीत कौर, सचिव प्रो. सुरेश कुमार, डॉ. कंपेश पन्नू एवं डॉ. हिमानी शर्मा- ने बजट की परिवर्तनकारी सोच “दुविधा पर कार्रवाई, भाषण पर सुधार, लोकलुभावनता पर जनहित” का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। यह दृष्टिकोण 350+ सुधार पहलों, रोजगार, उत्पादकता, प्रतिस्पर्धा, और Vision 2047 के लक्ष्य के अनुरूप है। आठ प्रमुख आयाम-पूर्ण रोजगार, विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, अजेय रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नेतृत्व-भारत को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। यह बजट भारत को ट्रिलियन-डॉलर विनिर्माण अर्थव्यवस्था बनाने और वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर करने का मार्ग प्रशस्त करता है। नैतिक बजटिंग, क्रोनी कैपिटलिज़्म और अंधाधुंध उपभोक्तावाद को नियंत्रित करते हुए, धर्म और कर्मयोग के मूल्यों पर आधारित एक सतत और समावेशी विकास पथ को सुनिश्चित करती है। यह एक निर्णायक वित्तीय नीति क्षण है, जो भारत को 2047 तक “विश्वगुरु” के रूप में स्थापित करने की दिशा में अग्रसर करता है। ब्लॉकचेन आधारित सप्लाई चेन, क्वांटम सेमीकंडक्टर, फेडरेटेड लर्निंग, ग्रामीण एआई और नैतिक एआई ढाँचे जैसे नवाचारों के माध्यम से यह बजट एक व्यापक आर्थिक पुनर्जागरण का संकेत देता है। साथ ही यह नई शिक्षा नीति 2020 के बहुविषयी दृष्टिकोण को सशक्त बनाते हुए स्वदेशी शोध संस्थान को एक अग्रणी स्वदेशी आर्थिक थिंक टैंक के रूप में स्थापित करता है।

- **तिरंगा बंधन कार्यक्रम- 26 जनवरी 2026 भारत के 77वें गणतंत्र दिवस के गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक अवसर पर "तिरंगा बंधन कार्यक्रम" का आयोजन किया गया।**



यह कार्यक्रम भारत के संविधान के अंगीकरण की स्मृति में तथा संप्रभुता, एकता, राष्ट्रवाद और स्वदेशी जैसे उन स्थायी आदर्शों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया, जो भारतीय गणराज्य की आत्मा को परिभाषित करते हैं। कार्यक्रम में कश्मीरी लाल जी भाई साहब, सतीश जी भाई साहब एवं अर्चना मीना जी सहित स्वदेशी जागरण मंच के अन्य प्रमुख राष्ट्रीय सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। तिरंगा ध्वज फहराए जाने के साथ ही उपस्थित सभी लोगों ने भारत के संवैधानिक मूल्यों तथा विचार और अर्थव्यवस्था दोनों में पूर्ण स्वराज के संकल्प को पुनः दोहराया। मंच के शीर्ष नेतृत्व की उपस्थिति ने राजनीतिक संप्रभुता और आर्थिक आत्मनिर्भरता के बीच गहरे संबंध को रेखांकित किया। अपने संबोधन में नेताओं ने इस बात पर बल दिया कि सच्चा राष्ट्रप्रेम स्वदेशी वस्तुओं के प्रोत्साहन और भारतीय मूल्यों के संरक्षण में निहित है। यह समारोह केवल एक औपचारिक आयोजन न होकर शोधकर्ताओं एवं स्वयंसेवकों के लिए आत्मनिर्भर भारत के निर्माण हेतु एक प्रेरणादायक आह्वान था। संस्थान में, जो स्वदेशी अनुसंधान का एक प्रमुख केंद्र है, राष्ट्र की इस स्थापना का उत्सव मनाते हुए ज्ञान-आधारित, स्वदेशी सिद्धांतों पर आधारित भविष्य की आवश्यकता को रेखांकित किया गया। कार्यक्रम का समापन भारत के आर्थिक हितों की रक्षा करने और स्थानीय सशक्तिकरण के माध्यम से गणतंत्र की भावना को प्रत्येक घर तक पहुँचाने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

- 21 नवंबर 2025- कैप्टन बी. के. त्यागी (एमडी, शिपयार्ड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया) का दौरा



21 नवंबर 2025 को शिपयार्ड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक कैप्टन बी. के. त्यागी का संस्थान में दौरा हुआ। उन्होंने 2030 तक वैश्विक शिपिंग बाजार में 20% हिस्सेदारी हासिल करने तथा 2047 तक भारत को समुद्री क्षेत्र में विश्व का अग्रणी राष्ट्र बनाने की संस्था की दूरदर्शी योजना प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि के रूप में कैप्टन त्यागी ने शोधकर्ताओं को संबोधित करते हुए संस्थान के मिशन और विजन की सराहना की। उन्होंने शिपयार्ड कॉर्पोरेशन के 2030 के लक्ष्य पर भी प्रकाश डाला, जिसके अंतर्गत वर्तमान 12% से बढ़ाकर 20% वैश्विक शिपमेंट हिस्सेदारी प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है, साथ ही 2047 तक भारत को विश्व में प्रथम स्थान पर स्थापित करने की परिकल्पना की गई है। इसके पश्चात श्री सतीश कुमार जी ने अपने समापन उद्बोधन में अतिथि का स्वागत करते हुए इस प्रकार के संवादों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सरकार, शिपयार्ड कॉर्पोरेशन और स्वदेशी शोध संस्थान का लक्ष्य “विजन 2047: समृद्ध और महान भारत” की साझा दिशा में अग्रसर है। उन्होंने कैप्टन त्यागी एवं शिपयार्ड कॉर्पोरेशन द्वारा प्रस्तुत स्पष्ट एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण की सराहना की। कार्यक्रम का समापन शोधकर्ताओं और अतिथि के बीच सार्थक चर्चाओं तथा अल्पाहार के साथ हुआ।

- 09 अक्टूबर 2025 प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा का स्वदेशी शोध संस्थान में आगमन



प्रो. शर्मा ने संस्थान की टीम के साथ संवाद करते हुए भविष्य की शोध एवं संगठनात्मक पहलों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने विज्ञान 2047 के अंतर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (S&T) नेतृत्व को सुदृढ़ करने पर बल दिया, जिससे भारत को विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के स्तंभ मजबूत होंगे। उन्होंने 5 करोड़ शोध आधारित रोजगार सृजन, डेटा-आधारित अर्थव्यवस्था, तथा ज्ञान निर्यात को ट्रिलियन डॉलर स्तर तक पहुँचाने की दिशा में रणनीतिक शिक्षा सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। साथ ही, आयात निर्भरता को 70% तक कम करने के लक्ष्य को भी रेखांकित किया। यह पहल MSME कौशल विकास, महिला शोध केंद्रों एवं ग्रामीण डेटा केंद्रों के विकास को भी प्रोत्साहित करती है। उन्होंने “भारतीय सत्य” पर आधारित नैतिक शोध को पश्चिमी डेटा उपनिवेशवाद के विरुद्ध आवश्यक बताया। यह क्षण भारत में शोध अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जो 1000 विश्वविद्यालयों को एक मिशन मोड में जोड़ते हुए “विकसित भारत डेटा क्रांति” को गति देगा। स्वदेशी शोध 140 करोड़ की जनसंख्या को एक शक्ति में परिवर्तित करते हुए बेरोजगार वृद्धि को समाप्त कर भारत को एक ट्रिलियन डॉलर डेटा सुपरपावर बनाएगा और 2047 तक “विश्व गुरु भारत” के रूप में स्थापित करेगा। इसमें ब्लॉकचेन आधारित डेटा संप्रभुता, क्वांटम सुरक्षित डेटा भंडारण, फेडरेटेड लर्निंग और ग्रामीण AI जैसे उन्नत क्षेत्रों का भी समावेश होगा। यह संपूर्ण शोध पुनर्जागरण, नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बहुविषयी डेटा विज्ञान को बढ़ावा देते हुए SSS को भारत के अग्रणी स्वदेशी शोध संस्थान के रूप में स्थापित करता है।

- 27 सितंबर 2025 स्वदेशी शोध संस्थान के नए कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सोमनाथ सचदेवा का उद्घाटन संबोधन



प्रो. सचदेवा ने अपने उद्घाटन भाषण में संगठन की नई दिशा को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि “स्वदेशी” स्थानीय से वैश्विक तक का सेतु है, जिसे “वोकल फॉर लोकल” के माध्यम से समझा जा सकता है। विज्ञान 2047 की प्राप्ति के लिए उन्होंने स्वदेशी की प्रासंगिकता को पहले से अधिक महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने भारतीय संस्कृति, परंपराओं एवं ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण पर बल दिया और संस्थान को इस राष्ट्रीय दृष्टि का संरक्षक बनने का आह्वान किया।

उन्होंने संस्थान के लिए तीन प्रमुख कदम सुझाए:

1. सामाजिक रूप से प्रासंगिक और उपयोगी शोध को सशक्त बनाना।
2. समाज और लोगों को संस्थान से जोड़ना।
3. युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।

उन्होंने शोध और नवाचार को इस यात्रा का केंद्र बताया तथा ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण में उद्यमिता के महत्व को रेखांकित किया।

- 27 सितंबर 2025 डॉ. वी.बी. श्रीधर वेंबू का स्वागत



संस्थान ने दूरदर्शी नेतृत्व से संबंध सुदृढ़ करने के उद्देश्य से डॉ. वेंबू का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि लोगों में संकल्प की कमी है और शोध को व्यावहारिक होना चाहिए, जो नीति निर्माण में सहायक हो तथा उद्यमिता को बढ़ावा दे। उन्होंने जोर देकर कहा कि समृद्ध भारत के निर्माण में उद्यमियों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी।

• 5 सितंबर 2025 शिक्षक दिवस मिलन- समृद्ध भारत में शिक्षकों की भूमिका



इस कार्यक्रम का आयोजन शिक्षकों के सम्मान हेतु किया गया, जिसमें प्रो. रूबी मिश्रा ने मुख्य वक्तव्य दिया। कार्यक्रम ने “गुरु-शिष्य परंपरा” को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करते हुए SSS को शिक्षा एवं शोध केंद्र के रूप में स्थापित किया।

मुख्य परिणाम:

- मेंटर सम्मान कार्यक्रम
- प्रगति ट्रेकिंग प्रणाली
- त्रैमासिक शोध गुरु बैठकें
- NEP 2020 के अनुरूप पाठ्यक्रम मॉड्यूल

यह पहल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास और ज्ञान अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है, जिससे लाखों शिक्षण रोजगार सृजित होंगे। यह भारतीय गुरुकुल परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक से समन्वय स्थापित करती है। धर्म, कर्म और योग पर आधारित नैतिक शिक्षा पश्चिमीकरण के प्रभाव को संतुलित करते हुए सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखती है। यह शिक्षा पुनर्जागरण भारत को 2047 तक “विश्व गुरु” बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

- 01 सितंबर 2025 अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल का दौरा, यह दौरा विनिर्माण, स्टार्टअप और रोजगार पर केंद्रित था।



प्रो. चौहान ने स्वदेशी जागरण मंच के “स्वावलंबी भारत अभियान” की व्याख्या करते हुए कहा कि स्वदेशी केवल उपभोक्तावाद नहीं, बल्कि संप्रभुता और एकात्म मानववाद का प्रतीक है, जिसकी नींव दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने रखी। डॉ. कंपेश पन्नू ने SSS के 11 शोध क्षेत्रों पर प्रकाश डाला, जिनमें अर्थव्यवस्था, जनसंख्या, चीन अध्ययन, ऊर्जा, MSME, स्टार्टअप आदि शामिल हैं।

मुख्य परिणाम:

- संयुक्त शोध
- MoU समझौते
- उद्योग-समन्वित शोध
- स्टार्टअप मेंटरशिप
- नीति दस्तावेज

यह पहल SSS को विनिर्माण पुनर्जागरण का प्रमुख केंद्र बनाते हुए भारत को आत्मनिर्भर औद्योगिक शक्ति के रूप में स्थापित करती है।

- 15-16 अगस्त 2025 ज्ञान कुंज का उद्घाटन (स्वदेशी शोध संस्थान)



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में कश्मीरी लाल जी और सतीश जी सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। यह आयोजन राष्ट्रीय गौरव और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प का प्रतीक था। कार्यक्रम की मुख्य विशेषता MoU पर हस्ताक्षर थी, जिसने स्वदेशी सिद्धांतों पर आधारित शोध और उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन को सुदृढ़ किया। यह “बौद्धिक उपनिवेशवाद से मुक्ति” का प्रतीक बना, जो दर्शाता है कि राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद अब आर्थिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता की दिशा में कार्य आवश्यक है। ज्ञान कुंज शोधकर्ताओं के लिए एक समर्पित केंद्र के रूप में स्थापित हुआ, जहाँ स्वदेशी ज्ञान, सतत विकास और आत्मनिर्भर भविष्य का निर्माण किया जाएगा।

- 28-29 जून 2025 कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पोस्ट-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला-
विज़न 2047



इस कार्यशाला ने SSS को एक पारंपरिक अकादमिक मंच से एक नीति-निर्माण थिंक टैंक के रूप में पुनर्परिभाषित किया। नेतृत्व ने जोर दिया कि शोध सामाजिक रूप से उपयोगी होना चाहिए और गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

मुख्य बिंदु:

- भारतीय मूल्य आधारित शोध
- प्रत्येक राज्य में संस्थान की स्थापना
- स्वदेशी शोध पद्धतियों का विकास

प्रमुख पहलें:

- *अर्थायाम जर्नल* – एक विश्वस्तरीय शोध पत्रिका
- उद्योग-अकादमिक समन्वय
- वित्तीय आत्मनिर्भरता (CSR, परामर्श, उद्योग सहयोग)

यह कार्यशाला भारत में एक स्वदेशी शोध पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई।

व्याख्यानमाला

हम एक पखवाड़ा (Fortnightly) आधारित व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन करते हैं, जिसका उद्देश्य संवाद को प्रोत्साहित करना तथा शैक्षणिक शोध और उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन के बीच की दूरी को समाप्त करना है। यह श्रृंखला सुनिश्चित करती है कि सैद्धांतिक विचार वास्तविक जीवन में प्रभाव उत्पन्न करें।

- 02/02/2026, “भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता: बहुध्रुवीय विश्व में ग्लोबल साउथ का नेतृत्व”



स्वदेशी शोध संस्थान के ग्लोबल आउटलुक एवं भारत वर्टिकल द्वारा आयोजित इस व्याख्यान में ब्रिक्स को केवल “टॉक शॉप” से आगे ले जाकर ठोस परिणामों पर बल दिया गया। छात्रों, शोधकर्ताओं एवं नीति-विश्लेषकों के बीच हुए संवाद में निम्न बिंदुओं पर चर्चा हुई:

- रणनीतिक स्वायत्तता
- वैश्विक नेतृत्व
- बहुपक्षवाद का भविष्य

मुख्य निष्कर्ष:

- ब्रिक्स आधारित अनुसंधान को बढ़ावा
- ग्लोबल आउटलुक वर्टिकल द्वारा 50 नीति-पत्र तैयार करने का लक्ष्य
- विदेश मंत्रालय, नीति आयोग, 20 विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग

यह पहल विजन 2047 के अंतर्गत भारत को वैश्विक नेतृत्व, UNSC स्थायी सदस्यता और G20 नेतृत्व की दिशा में सुदृढ़ करती है।

- 20/01/2026 भारत के सामरिक एवं सैन्य आयाम, वक्ता: लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. चतुर्वेदी



उन्होंने भारत की सुरक्षा संरचना के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डाला:

- रणनीतिक स्वायत्तता
- रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता
- तीनों सेनाओं के बीच समन्वय (Jointness)
- तकनीकी उन्नति

उन्होंने चेतावनी दी कि यदि राष्ट्र आत्मसंतुष्ट हो जाए तो उसका अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।

मुख्य बिंदु:

- बहु-फ्रंट युद्ध की तैयारी
- लॉजिस्टिक सुदृढ़ता
- NRC को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़कर देखना

समापन में उन्होंने प्रेरणादायक पंक्तियाँ प्रस्तुत कीं:

“उठो धरा के वीर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो।”

- 13/12/2025 “प्रभावी शोध के लिए AI एवं डिजिटल कौशल”, वक्ता: डॉ. दीपक बिशला



इस कार्यशाला में AI के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई:

- AGI, ASI और ट्यूरिंग टेस्ट
- CNN के माध्यम से प्राचीन ग्रंथों का पुनर्स्थापन
- प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग एवं डेटा वैलिडेशन

मुख्य विशेषताएँ:

- AI का व्यावहारिक प्रशिक्षण
- नैतिक उपयोग और डेटा सुरक्षा पर बल
- शोध में AI को सहायक उपकरण के रूप में उपयोग

- 10/12/2025 “रोजगार: भारत में उद्यमिता की भूमिका”, वक्ता: प्रो. अरविंद कुमार



उन्होंने भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम पर व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया:

- MVP (Minimum Viable Product)
- प्रारंभिक चुनौतियाँ और समाधान
- फंडिंग के स्रोत

प्रेरणादायक संदेश:

“छोटा शुरू करें, बड़ा सोचें”

- 03/12/2025 “आत्मनिर्भरता और रणनीतिक स्वायत्तता”, वक्ता: प्रो. बालगणपति देवरकोंडा



उन्होंने आत्मनिर्भरता को केवल आर्थिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अवधारणा बताया:

मुख्य विचार:

- तत्वज्ञान (Metaphysics): जीवन के उद्देश्य की समझ
- नैतिकता (Ethics): जिम्मेदार आचरण

उन्होंने भगवद्गीता और कबीर के उदाहरणों के माध्यम से आत्म-विकास और समानता की नई परिभाषा प्रस्तुत की।

- 25/09/2025 “शोध एवं नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र का विकास”, वक्ता: डॉ. सपना पोटि



मुख्य पहल:

- ग्रामीण नवाचार और R&D
- महिला STEM सहभागिता
- स्मार्ट विलेज केंद्र

उन्होंने 6 लाख गाँवों को तकनीकी क्रांति से जोड़ने का आह्वान किया।

29/08/2025 “सप्त सिंधु से वर्तमान तक”, वक्ता: प्रो. रविंदर कुमार



मुख्य चर्चा बिंदु:

- पंजाब की सांस्कृतिक विरासत
- उग्रवाद और पहचान की राजनीति
- नशे की समस्या और उसके कारण

- 10/07/2025 “इंडस वाटर ट्रीटी पर पुनर्विचार”, वक्ता: संजय कुंडू



मुख्य निष्कर्ष:

- 1960 की संधि वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल नहीं
- भारत को जल संप्रभुता (Hydro-Sovereignty) पर बल देना चाहिए

- 19/06/2025 “ऑपरेशन सिंदूर: चीन-पाकिस्तान संबंध”, वक्ता: प्रो. श्रीकांत कौंडापल्ली



मुख्य बिंदु:

- चीन-पाकिस्तान रणनीतिक गठबंधन
- भारत की सटीक सैन्य प्रतिक्रिया
- डिजिटल नैरेटिव युद्ध की आवश्यकता

- 13/06/2025 “युद्ध का विकास: बारूद से एल्गोरिद्म तक”, वक्ता: लेफ्टिनेंट जनरल पी.सी. नायर



मुख्य चर्चा:

- AI आधारित युद्ध
- साइबर और ड्रोन युद्ध
- स्वचालित हथियार प्रणाली

- 06/06/2025 “भारतीय सशस्त्र बल: एक परिचय”, वक्ता: कर्नल अशुतोष कुमार (सेवानिवृत्त)



मुख्य बिंदु:

- सेना, नौसेना, वायुसेना का समन्वय
- रक्षा आधुनिकीकरण
- तकनीकी एकीकरण

20/05/2025 “भारतीय सभ्यता का चीन पर प्रभाव”, वक्ता: प्रो. बी.आर. दीपक



मुख्य बिंदु:

- नालंदा, तक्षशिला का योगदान
- बौद्ध धर्म का प्रभाव
- सांस्कृतिक एवं भाषाई आदान-प्रदान

समग्र निष्कर्ष

यह व्याख्यान श्रृंखला केवल ज्ञान-वितरण का मंच नहीं है, बल्कि:

- नीति निर्माण का आधार
- शोध एवं नवाचार का प्रेरक
- आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक ठोस कदम

इंटरनशिप कार्यक्रम

हम दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए तीन माह की इंटरनशिप कार्यक्रम आयोजित करते हैं, जो शैक्षणिक सिद्धांत और व्यावसायिक अभ्यास के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य करता है। उच्च प्रभाव वाले लाइव प्रोजेक्ट्स में सहभागिता के माध्यम से छात्र कक्षा में सीखे गए सिद्धांतों को व्यावहारिक उद्योग समाधान में परिवर्तित करते हैं, साथ ही उन्हें अनुभवी पेशेवरों से मार्गदर्शन भी प्राप्त होता है।

इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वुमेन



इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वुमेन की 74 छात्राओं को सशक्त बनाते हुए, हम शैक्षणिक उत्कृष्टता और नेतृत्व की एक समृद्ध विरासत का उत्सव मनाते हैं। ये छात्राएँ दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठित परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ बौद्धिक गहराई के साथ सामाजिक प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता का समन्वय दिखाई देता है। वे एक सशक्त परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभर रही हैं, जो ईमानदारी और दूरदृष्टि के साथ भविष्य को आकार देने के लिए तैयार हैं।

शहीद भगत सिंह कॉलेज



हम शहीद भगत सिंह कॉलेज के 20 छात्रों के इस उत्कृष्ट समूह की शैक्षणिक और व्यावसायिक उत्कृष्टता के प्रति समर्पण को सम्मानित करते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय प्रमुख संस्थानों में से एक का प्रतिनिधित्व करते हुए, ये छात्र अनुशासन, विश्लेषणात्मक क्षमता और दूरदर्शी नेतृत्व के मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। वे अपने संस्थान की उस विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं, जो भारत के सामाजिक-आर्थिक और कॉर्पोरेट परिदृश्य में सार्थक योगदान देने के लिए जानी जाती है।

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (प्रातःकालीन)



हम ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (प्रातःकालीन) के 50 छात्रों की शैक्षणिक दृढ़ता और व्यावसायिक विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की सराहना करते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे पुराने संस्थानों में से एक होने के नाते, ये छात्र ऐतिहासिक दृष्टिकोण और आधुनिक बौद्धिक उत्कृष्टता का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करते हैं। वे अपने संस्थान की विरासत के अनुरूप सत्यनिष्ठा और दृढ़ता के साथ राष्ट्र के विकसित होते पेशेवर परिदृश्य में योगदान देने के लिए तैयार हैं। उनका सामूहिक सामर्थ्य उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए एक सशक्त समूह के रूप में स्थापित करता है।

प्रकाशन (2025–2026)

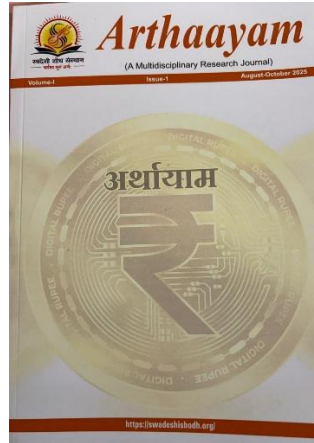
पुस्तकें/जर्नल लेख/शोध पत्र/न्यूज़लेटर

हम विभिन्न विषयों पर शोध पत्र लिखते हैं, जो हमारी बौद्धिक जिज्ञासा और राष्ट्र-केंद्रित शोध के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। प्रत्येक शोध पत्र का उद्देश्य नीति-निर्माण, अकादमिक क्षेत्र और जन-चर्चा में सार्थक योगदान देना है।

पुस्तकें

हम विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखते और प्रकाशित करते हैं, जो गहन शोध, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और समकालीन मुद्दों की व्यापक समझ को प्रस्तुत करती हैं। ये पुस्तकें अकादमिक जगत, नीति-निर्माताओं और सामान्य पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं।

जर्नल



10 नवम्बर 2025 को स्वदेशी शोध संस्थान ने “अर्थायाम” जर्नल का विमोचन किया, जो शोध-आधारित राष्ट्रीय विकास को सशक्त करने की उसकी प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित करता है। स्वदेशी दर्शन पर आधारित गहन चिंतन भारत की बौद्धिक प्रगति, नीति-निर्देशन तथा आत्मनिर्भर भविष्य की दृष्टि को आकार देने में इसकी सतत प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

न्यूज़लेटर प्रकाशन

1. 01-15 अप्रैल 2025

विशेष लेख: सतत भारत के लिए सतत ऊर्जा: नीति और प्रौद्योगिकी परिप्रेक्ष्य
~ नमन कश्यप एवं वैभव पांडेय

शोध लेख: कौटिल्य की सैन्य रणनीति और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में उसकी प्रासंगिकता

~ लीना

2. **16-30 अप्रैल 2025**

विशेष लेख: विकसित भारत @2047 में रहने योग्य शहर

~ डॉ. नित्यानंद के.वी.

शोध लेख: भारत के रक्षा निर्यात में वृद्धि: प्रमुख खरीदार और निर्यातित तकनीकें

~ लीना

3. **01-15 मई 2025**

विशेष लेख: विकसित भारत @2047 में रहने योग्य शहर

~ डॉ. नित्यानंद के.वी.

शोध लेख: भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी: उभरते वैश्विक परिदृश्य में नई चुनौतियाँ और अवसर

~ डॉ. राकेश आर्य

4. **16-31 मई 2025**

विशेष लेख: चीन की स्ट्रिंग ऑफ पलर्स नीति: भारत के लिए निहितार्थ

~ डॉ. रीता कुमारी

शोध लेख: स्वायत्त युद्ध का उदय: घातक स्वायत्त हथियार प्रणाली

~ लीना

5. **01-15 जून 2025**

विशेष लेख: LLMOps: प्रमुख अवधारणाओं सहित विस्तृत मार्गदर्शिका

~ मुगुंथन सौंदरराजन

शोध लेख: भारत में नई शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन की चुनौतियाँ: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

~ डॉ. एम. पलानीनाथ राजा

6. **16-30 जून 2025**

विशेष लेख: कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न नैतिक द्वंद्व और संज्ञानात्मक असंगति

~ वैभव पांडेय

शोध लेख: दक्षिण चीन सागर में चीन की रणनीति: भारत की चिंता

~ डॉ. रीता कुमारी

7. **01-15 जुलाई 2025**

विशेष लेख: भारत में पर्यावरणीय मुद्दे और आंदोलन

~ डॉ. अमित कुमार

शोध लेख: परंपरागत ज्ञान, आधुनिक विकास और राजनीति: भारत में मिट्टी कला

(कुम्हार का ज्ञान)

~ डॉ. अमित कुमार

8. **16-31 जुलाई 2025**

विशेष लेख: कौशल अंतर को पाटना: एक राष्ट्रीय आवश्यकता

~ एस. रंगराजन

शोध लेख: डिजिटल इंडिया के 10 वर्ष: परिवर्तन, सशक्तिकरण और समावेशन का दशक

~ वैभव पांडेय

9. **01-15 अगस्त 2025**

विशेष लेख: भारतीय अर्थव्यवस्था की झलक: प्राचीन से समकालीन परिप्रेक्ष्य

~ निशांत चतुर्वेदी

शोध लेख: अंतरिक्ष अगला युद्धक्षेत्र: ASAT के बाद भारत की सैन्य अंतरिक्ष रणनीति

~ लीना

10. **16-31 अगस्त 2025**

विशेष लेख: तीनहरी चुनौती: भारतीय उद्योग नवाचार, परिवर्तन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में क्यों पिछड़ते हैं

~ विनीत हांडा

शोध लेख: शी जिनपिंग के राजनीतिक भविष्य पर अटकलें

~ डॉ. रीता कुमारी

11. **01-15 सितम्बर 2025**

विशेष लेख: NXT ढांचा (नवाचार, घातीय परिवर्तन, वैश्विक सोच)

~ विनीत हांडा

शोध लेख: भारत की विश्व दृष्टि

~ डॉ. राकेश आर्य

12. **16-30 सितम्बर 2025**

विशेष लेख: ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन का ज़ांगमु बांध: भारत की चिंताएँ

~ डॉ. रीता कुमारी

शोध लेख: विकसित भारत 2047: शिक्षा में नवाचार के माध्यम से परिवर्तन

~ डॉ. विनीत हांडा

13. **01-15 अक्टूबर 2025**

विशेष लेख: कामंडकीय नीतिसार में युद्ध और शांति की गतिशीलता

~ अनुष्का वर्मा

शोध लेख: विश्वसनीय AI के लिए विश्वसनीय डेटा का महत्व

~ मुगुंथन सौंदरराजन

14. **16-31 अक्टूबर 2025**

विशेष लेख: भारत में रोजगार सृजन में अभूतपूर्व वृद्धि

~ विनीत हांडा

शोध लेख: भारत की भू-आर्थिक संप्रभुता के लिए रणनीतिक ढांचा

~ मुरली सुंदरम

15. **01-15 नवम्बर 2025**

विशेष लेख: भारत के रक्षा आयात स्रोतों में समय के साथ बदलाव

~ लीना एवं कार्तिक शर्मा

शोध लेख: स्वदेशी और विजन 2047 में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका

~ वैभव पांडेय

16. **16-30 नवम्बर 2025**

विशेष लेख: चीन के आठ-बिंदु नियम और लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रश्न

~ डॉ. रीता कुमारी

शोध लेख: ऑपरेशन सिंदूर के परिप्रेक्ष्य में भारत

~ डॉ. राकेश आर्य

17. **01-15 दिसम्बर 2025**

विशेष लेख: भारत की जनरेशन Z

~ डॉ. मुरली सुंदरम

शोध लेख: रणनीतिक आत्मनिर्भरता के लिए PPP मॉडल

~ लीना

18. **16-31 दिसम्बर 2025**

विशेष लेख: विवेकानंद के शक्ति दर्शन का पुनरुद्धार

~ अनुशका वर्मा

शोध लेख: भारत-रूस समझौता

~ नमन कश्यप

19. **01-15 जनवरी 2026**

विशेष लेख: बहुध्रुवीय विश्व में भारत की रणनीतिक विविधता

~ डॉ. राकेश आर्य

शोध लेख: ऑपरेशन सिंदूर: नैरेटिव युद्ध दृष्टिकोण

~ लीना

20. **16-31 जनवरी 2026**

विशेष लेख: पुतिन की भारत यात्रा: चीन के लिए चिंता?

~ डॉ. रीता कुमारी

शोध लेख: EU-India FTA और स्वदेशी विकास
~ कार्तिक

21. 01-15 फरवरी 2026

विशेष लेख: बजट 2026 के मुख्य बिंदु
~ सीए शिरीष

शोध लेख: MSME पर बजट 2026-27 का प्रभाव
~ प्रिया कुमार

22. 16-28 फरवरी 2026

विशेष लेख: इंडिया AI इम्पैक्ट समिट 2026
~ मुगुंथन सौंदरराजन

शोध लेख: तिब्बत पर चीन की नीति और भारत के लिए निहितार्थ
~ डॉ. रीता

23. 01-15 मार्च 2026

विशेष लेख: भारत-चीन हालिया सहयोग: रणनीतिक विश्लेषण
~ डॉ. रीता

शोध लेख: गेमिफाइड रेफरल प्रोग्राम्स और उद्यमिता
~ कमालिका कृष्णी

24. 16-31 मार्च 2026

विशेष लेख: राफेल रणनीति: भारत की वायु शक्ति
~ लीना

शोध लेख: वैश्विक बाजारों में महिलाओं की आर्थिक शक्ति
~ मुरली

चैप्टर गतिविधियाँ

हम विविध अध्याय गतिविधियों का आयोजन करते हैं, जो उच्च-प्रभाव वाले प्रोजेक्ट्स और कार्यशालाओं के माध्यम से सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावसायिक अभ्यास के बीच की दूरी को कम करती हैं। प्रतिभागी अनुभवी मार्गदर्शकों के निर्देशन में अवधारणात्मक ज्ञान को व्यावहारिक समाधानों में परिवर्तित करते हैं। हमारा संरचित दृष्टिकोण तकनीकी और सॉफ्ट स्किल दोनों के विकास पर समान रूप से बल देता है।

पंजाब चैप्टर



- महान एवं समृद्ध भारत पर चिंतन: सांस्कृतिक जड़ों, सतत विकास, शिक्षा, व्यापार और रक्षा पर विमर्श।
- चंडीगढ़ अध्याय का शुभारंभ एवं ऑपरेशन सिंदूर को नमन।
- “बी. जी. तिलक का जीवन और विरासत” पर व्याख्यान: विद्वानों ने तिलक की बौद्धिक विरासत, स्वराज की उनकी परिकल्पना तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण पर चर्चा की, साथ ही समकालीन संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता पर भी विचार-विमर्श हुआ।
- "अर्थायम" (बहुविषयक शोध पत्रिका) के प्रकाशन हेतु केंद्रीय नोड के रूप में कार्य किया।
- संगठन के लिए शोध सामग्री के प्रारूपण, संपादन एवं मुद्रण का संपूर्ण प्रबंधन किया।
- पंजाब में व्यापार एवं उद्योग पर संगोष्ठी का आयोजन।

- स्टार्टअप, उद्यमिता एवं औद्योगिक उन्नति पर विचार-विमर्श, जिससे पंजाब की आर्थिक वृद्धि को गति मिल सके।
- पंजाब से ब्रेन ड्रेन पर राउंड टेबल चर्चा: युवाओं के पलायन के कारणों का विश्लेषण एवं प्रतिभा को बनाए रखने के उपाय सुझाए गए।
- एग्री-बिजनेस एवं किसान उत्पादक संगठन (FPO) पर संगोष्ठी: पंजाब की कृषि संबंधी चुनौतियों और सतत समाधान में FPO की भूमिका पर प्रकाश डाला गया।
- उद्यमिता के माध्यम से रोजगार पर संगोष्ठी: रोजगार के अवसरों में संकट और पंजाब के युवाओं के लिए उद्यमिता को एक नए प्रतिमान के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- “नया पंजाब, नया भारत” पर संगोष्ठी: महिला बेरोजगारी, नशाखोरी, हरित क्रांति के प्रभाव तथा MSMEs को सशक्त बनाने पर चर्चा।
- “नया पंजाब, नया भारत” पर राउंड टेबल चर्चा: ब्रेन ड्रेन, धार्मिक परिवर्तन एवं उग्रवाद, तथा आर्थिक एवं कृषि विकास में गिरावट जैसी चुनौतियों पर विशेष ध्यान।
- अमृतसर ग्रुप ऑफ कॉलेजेज (AGC) के साथ औपचारिक समझौता (MOU) हस्ताक्षरित किया, जिससे संस्थागत शोध एवं सहयोग को बढ़ावा मिला।
- अमृतसर में उच्च-स्तरीय ‘विमर्श’ बैठक का आयोजन, जिसमें राज्य के सामाजिक-आर्थिक ढांचे पर चर्चा की गई।
- निरंतर बौद्धिक संवाद हेतु वर्चुअल “विचार वर्ग” सत्रों का आयोजन।
- “स्वदेशी स्वाभिमान” अभियान में सक्रिय भागीदारी तथा “स्वदेशी रक्षा एवं स्वावलंबन” विषयों पर सत्र आयोजित किए।

चेन्नई चेंटर



- आर. सुंदरम एवं डॉ. श्रीनिवासन अयंगर के साथ सम्मेलन; डॉ. गंगा विद्या एवं डॉ. नित्यानंद (आईआईएम त्रिची) द्वारा शोध-पत्र प्रस्तुत
“बी.जी. तिलक का जीवन और विरासत” विषय पर व्याख्यान, थियागराजा कॉलेज, मदुरै
मैडम सुमिता विभु द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) सत्र
मालोन कॉलेज में इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल का उद्घाटन
SRIMST एवं श्रीमद आंडवन आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज में ओरिएंटेशन एवं करियर मार्गदर्शन सत्र
आईआईटी मद्रास के साथ नीति-निर्माण पर मंथन सत्र
डॉ. आर. वैद्यनाथन (आईआईएम बेंगलोर) द्वारा ऑनलाइन संकाय सत्र
महिला दिवस समारोह; मुख्य अतिथि: मैडम करुणा गोपाल
पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सुरेश प्रभु द्वारा ऑनलाइन संबोधन
आईआईटी मद्रास सहित 15 एमओयू पर हस्ताक्षर

हरियाणा चैप्टर



विकसित भारत @2047 व्याख्यान शृंखला: आईजीयू रेवाड़ी और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथ मुख्य सत्रों का आयोजन।

पारंपरिक अर्थशास्त्र: “कौटिल्य का अर्थशास्त्र” और “मंदिर एवं उत्सव अर्थव्यवस्था” पर व्याख्यान।

महिला स्वास्थ्य कार्यशालाएँ: मासिक धर्म स्वच्छता एवं स्तन/गर्भाशय ग्रीवा कैंसर की रोकथाम पर जागरूकता कार्यक्रम।

उद्यमिता पखवाड़ा: बिजनेस प्लान और स्लोगन लेखन प्रतियोगिताएँ।

आतिथ्य क्षेत्र पर ध्यान: छात्रों और संकाय के लिए विशेष कार्यशालाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण।

स्वदेशी संकल्प दौड़: करनाल और रेवाड़ी में बड़े स्तर पर जागरूकता मैराथन।

राजस्थान चैप्टर



नीति एवं वैश्विक व्यापार विमर्श

• संगोष्ठी (अगस्त 2025): “ट्रम्प टैरिफ्स और वैश्विक व्यापार पुनर्गठन” विषय पर, 30 प्रमुख उद्यमियों और अर्थशास्त्रियों की भागीदारी।

• नेतृत्व: प्रो. अश्विनी महाजन (राष्ट्रीय सह-संयोजक, SJM) की अध्यक्षता।

अकादमिक एवं उद्योग समन्वय

• इंडस्ट्री-अकादमिक इंटरफेस: 30 उद्योग नेताओं और 30 शिक्षाविदों के साथ राउंड टेबल चर्चा।

- रणनीतिक उपलब्धि: जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय (JNVU) के साथ औपचारिक एमओयू।

पश्चिम बंगाल चैप्टर

विद्वत् सहभागिता एवं विस्तार

- प्रतिष्ठित विद्वानों के साथ तीन उच्च स्तरीय परामर्श बैठकें।
- कई विशेषज्ञों को संगठनात्मक ढांचे में सफलतापूर्वक जोड़ा गया।
- स्वदेशी विचार, आर्थिक आत्मनिर्भरता और शोध-आधारित पहल पर विशेष ध्यान।

अकादमिक सहयोग

- पश्चिम बंगाल के छह प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ औपचारिक संवाद स्थापित।
- संयुक्त शोध परियोजनाओं और भविष्य के बौद्धिक आदान-प्रदान के लिए संस्थागत प्रतिबद्धता प्राप्त।

हिमाचल प्रदेश चैप्टर

विकसित भारत एवं नारी शक्ति

- नर्सिंग और डिग्री कॉलेजों में “विकसित भारत 2047 और महिला सशक्तिकरण” विषय पर संवाद।
- सप्तशक्ति संगम: मंडी में महिला सशक्तिकरण पर विशेष संवाद का आयोजन।

युवा एवं मूल्य आधारित शिक्षा

- विवेकानंद व्याख्यान श्रृंखला: विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में स्वामी विवेकानंद के जीवन और विचारों पर कार्यक्रम।
- कौशल विकास: प्रधानमंत्री उत्कृष्टता कॉलेजों के माध्यम से “रोजगार एवं उद्यमिता अवसर” पर कार्यशालाएँ।

सामुदायिक जागरूकता एवं कार्यक्रम

- स्वदेशी संकल्प: जन-जागरूकता कार्यक्रम और गणतंत्र दिवस आयोजनों में भागीदारी।
- सामाजिक उत्तरदायित्व: सेवा भारती के साथ मिलकर छात्र कल्याण और छात्रावास प्रबंधन पहल।

अकादमिक प्रसार

- हिमाचल प्रदेश के पाँच प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ सक्रिय समन्वय, स्वदेशी शोध को पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु प्रयास।

त्रिपुरा चैप्टर

- **आत्मनिर्भर भारत के लिए पहल:** त्रिपुरा विश्वविद्यालय और होली क्रॉस कॉलेज ने मिलकर 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को सिद्ध करने के लिए क्षमता निर्माण और प्रबंधन विकास पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए।
- **टैरिफ युद्ध और भारत:** अगरतला प्रेस क्लब में एक बौद्धिक संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसका विषय "टैरिफ युद्ध में भारत का उद्भव" था। इसमें वैश्विक व्यापार नीतियों और टैरिफ चुनौतियों पर चर्चा हुई।
- **स्वदेशी की प्रासंगिकता:** अमेरिकी टैरिफ नीतियों के वर्तमान संदर्भ में 'स्वदेशी' मॉडल के महत्व पर प्रोफेसरों और शोधार्थियों के बीच एक गहन वैचारिक विमर्श हुआ।
- **विश्व आर्थिक व्यवस्था की पुनर्कल्पना:** स्वदेशी शोध संस्थान और दत्तोपंत ठेंगड़ी केंद्र द्वारा आयोजित व्याख्यान में इस बात पर जोर दिया गया कि वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों में वैश्वीकरण के बजाय 'स्थानीयकरण' (Localization) अधिक प्रभावी है।
- **एकात्म मानववाद और सर्वोदय:** पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती के अवसर पर 'एकात्म मानववाद', 'स्वदेशी' और 'स्व-भाव' जैसे विषयों पर एक बड़ी गोष्ठी हुई, जिसमें लगभग 800 शिक्षाविदों ने भाग लिया।
- **प्रमुख वक्ता:** इन कार्यक्रमों में स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय सह-संयोजक डॉ. अश्विनी महाजन, त्रिपुरा विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. दीपक शर्मा, और प्रो. श्यामोल दास जैसे दिग्गजों ने अपने विचार रखे।
- **उद्देश्य:** इन सभी कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य युवाओं और शोधार्थियों को प्रेरित करना है ताकि वे स्वदेशी संसाधनों और कौशल का उपयोग कर भारत को वैश्विक आर्थिक नेतृत्व दिला सकें।

समझौता ज्ञापन (MoUs)

नीतिनिर्माताओं और नवप्रवर्तकों की शक्तियों को एकीकृत करते हुए, हमारे समझौता ज्ञापन (MoUs) संस्थागत बाधाओं को समाप्त कर उच्च-गति नवाचार का एक सशक्त एवं समन्वित पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करते हैं। प्रत्येक हस्ताक्षर को हम एक साझा भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता के रूप में देखते हैं, जो सहयोग की संभावनाओं को एक राष्ट्रव्यापी रणनीतिक उत्कृष्टता आंदोलन में परिवर्तित करता है।

समझौता ज्ञापन (MoUs) की सूची

क्र.सं.	राज्य	विश्वविद्यालय / महाविद्यालय
1	जयपुर	एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, कोटा
2	असम	असम विश्वविद्यालय
3	उत्तर प्रदेश	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी
4	छत्तीसगढ़	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
5	पंजाब	लॉगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी
6	गुजरात	कौशल विकास (कौशलया) स्किल यूनिवर्सिटी
7	राजस्थान	महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
8	उत्तर प्रदेश	एनआईटी इलाहाबाद
9	विशाखापट्टनम	दामोदर संजीवय्या नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी
10	लद्दाख	सिंधु सेंटरल यूनिवर्सिटी
11	तमिलनाडु	NIFTEM, तंजावुर
12	असम	NIPER, गुवाहाटी
13	कोलकाता	NIPER, कोलकाता
14	उत्तर प्रदेश	NIPER, रायबरेली
15	गुजरात	NIPER, अहमदाबाद
16	तेलंगाना	NIPER, हैदराबाद
17	मेघालय	NIT, मेघालय
18	नागालैंड	NIT, नागालैंड

क्र.सं.	राज्य	विश्वविद्यालय / महाविद्यालय
19		विशाखापट्टनम NLU, विजाग
20		झारखंड सनातन ग्रुप ऑफ एजुकेशन
21	मध्य प्रदेश	राजमाता विजयाराजे सिंधिया विश्वविद्यालय, ग्वालियर
22	राजस्थान	मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर
23	उत्तर प्रदेश	एमजेपी रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली
24	उत्तर प्रदेश	डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
25	उत्तर प्रदेश	चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
26	असम	राष्ट्रीय ग्रामीण विकास निधि, गुवाहाटी
27	उत्तर प्रदेश	माँ शाकुंभरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर
28	उत्तराखंड	आईआईटी रुड़की
29	असम	AIIMS, गुवाहाटी
30	दिल्ली	एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज
31	मध्य प्रदेश	राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (NITTTR), भोपाल
32	मध्य प्रदेश	मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल
33	मध्य प्रदेश	लक्ष्मीपति इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, भोपाल
34	मध्य प्रदेश	इन्फोटेक एजुकेशन सोसायटी, भोपाल
35	हरियाणा	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
36	उत्तर प्रदेश	बाबासाहेब अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
37	दिल्ली	शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
38	दिल्ली	इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वूमैन, दिल्ली विश्वविद्यालय
39	हरियाणा	केंद्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा, महेंद्रगढ़
40	दिल्ली	दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
41	दिल्ली	जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (मॉर्निंग)
42	महाराष्ट्र	कानेरी मठ
43	हरियाणा	श्री विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी, पलवल
44	हरियाणा	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
45	हरियाणा	महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल
46	हरियाणा	गुरुग्राम विश्वविद्यालय

क्र.सं.	राज्य	विश्वविद्यालय / महाविद्यालय
47	हरियाणा	गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
48	हरियाणा	श्री कृष्ण आयुष विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
49	हरियाणा	दादा लख्मी चंद राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय, रोहतक
50	हरियाणा	जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
51	हरियाणा	महावाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल
52	हरियाणा	बीपीएस महिला विश्वविद्यालय, सोनीपत
53	महाराष्ट्र	जी.एच. रायसोनी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, नागपुर
54	—	एसकेएन सिंहगढ़ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग
55	गुजरात	एनआईटी, सूरत
56	मिजोरम	मिजोरम विश्वविद्यालय
57	राजस्थान	राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (RAJUVAS), बीकानेर
58	—	राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे
59	—	वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ, परभणी
60	—	सरदारकृष्णगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय
61	—	महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा
62	—	रूहिल्स फ्यूचर टेक्नोलॉजीज